शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

निबंधमाला - गद्य भाग

शीर्षक - "निर्बल के बल राम"

लेखक - महात्मा गाँधी जी

प्रश्न:- 'निर्बल के बल राम हैं' गाँधी जी की यह धारणा कहाँ तक तर्कसंगत है? इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- 'निर्बल के बल राम हैं' शीर्षक आत्मकथात्मक निबंध गाँधी जी की प्रसिद्ध रचना है। इस निबंध में गाँधीजी ने अपने साथ घटित घटनाओं को बड़े साफ गोई के साथ वर्णन किया है। इसमें इन्होंने विलायत में घटी एक घटना का उल्लेख करते हैं।

गाँधी जी अपने विलायत वास के अंतिम साल सन् 1890 की एक घटना का उल्लेख करते हैं। पोर्टस्मथ में अन्नाहारियों का एक सम्मेलन हुआ था। उसमें अपने एक हिन्दुस्तानी मित्र के साथ गाँधी जी भी आमंत्रित थे। पोर्टस्मथ खलासियों का बन्दरगाह कहलाता था। वहाँ काफी दुराचारिणी स्त्रियाँ रहती थी। वहाँ शायद ही कोई ऐसा घर मिले जो इस तरह के दुराचार से बचा हो।

गाँधी जी अपने मित्र के साथ ऐसे ही घर में ठहराए गये थे। ऐसा जानबूझ कर नहीं किया गया था, बल्कि वहाँ की सामाजिक ताना-बाना ही ऐसा था।

रात्रि में खा-पीकर गाँधी जी ताश खेलने बैठे। इस खेल में एक दुराचारिणी औरत भी शामिल थी। हँसी मजाक शुरु हुआ पर हास-परिहास बढ़ते-बढ़ते उस स्थिति में पहुँचा कि वह केवल विनोद का विषय न रहा अपितु शरीर के स्तर पर भी उतरने की स्थिति उत्पन्न हो गई। ताश अलग रखकर गाँधी जी डूबने की तैयारी कर ही रहे थे कि उनके हिन्दुस्तानी मित्र ने रोका "अरे तुझमें यह कलयुग क्यों? तेरा यह काम नहीं है। भाग यहाँ से।"

गाँधी जी का अटल विश्वास है कि हृदय से की गई ईश्वर की प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती है। ईश्वर उसे अवश्य सुनते हैं और समय पर आर्तव्यक्ति की सहायता भी करते हैं। शेष आगे —

P.T.O.

प्रतीक है। सारा संसार इससे ग्रस्त है। यह दानवीय कुकृत्यों की अन्तहीन गाथा है। शेष आगे की कक्षा में—

डॉ० देवचरण प्रसाद 05/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध - पद्य भाग

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

दुख दुःशलादिक को अभी कहना यद्यपि अवशिष्ट है,
पर पाठकों का जी दुखाना अब न हमको इष्ट है।
कर बार-बार क्षमार्चना होते विदा अब हम यहीं,
सुख के समय, दुख की कथा अच्छी नहीं लगती कहीं।।

मावार्थ

युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण की वन्दना करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। यह प्रसंग खण्ड काव्य के सप्तम् सर्ग से उद्धृत है। प्रस्तुत पद्यांश इस सर्ग का अंतिम पद है। कवि कहना चाहता है कि आपने बहुत कष्ट झेला है। परन्तु अब उन सब बातों का वर्णन करना उचित नहीं है। अब हम पुनः उन घटनाओं को स्मरण कर पाठकों का दिल दुखाना नहीं चाहता हूँ। अब मुझे इन सब बातों से कोई लेना-देना नहीं है। कवि मैथिलीशरण गुप्त बार-बार क्षमार्चना करते हुए अब विदा लेना चाहते हैं।

कवि का कहना है कि बहुत दिनों के उपरांत सुख का समय आया है। ऐसी घड़ी में दुःख की कथा कहना अच्छी बात नहीं है ऐसा कहकर अपने काव्य खण्ड को कवि यहीं पर विराम दे देते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद 05/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०डं० संभ०वि० दुखसेना, पूर्णियाँ

अतः हर आदमी को हृदय से भगवान का स्मरण करना चाहिए। ऐसे स्मरण करने वालों को अदृश्य रूप में उपस्थित होकर भगवान हर संकट की घड़ी में सहायता करते हैं, जिसका उसे कुछ पता नहीं चलता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ० सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

05/11/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० पत्र

दिगंत-भाग-2 पद्य भाग

शीर्षक - जन-जन का चेहरा एक

कवि - गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न :- "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता में कवि कवि मुक्तिबोध ने सशक्त एवं रोचक ढंग से विश्व के विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों के बीच एक खपता दर्शाते हुए प्रभावशाली एवं मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। कवि के अनुसार संसार के प्रत्येक महादेश, प्रदेश तथा नगर के लोगों में एक ही प्रवृत्ति पायी जाती है।

विद्वान कवि की दृष्टि में प्रकृति समान रूप से अपनी ऊर्जा, प्रकाश एवं अन्य सुविधाएँ समस्त प्राणियों को वे चाहे जहाँ निवास करते हों, उनकी भाषा एवं संस्कृति जो भी हो, बिना भेदभाव किये प्रदान कर रही है। कवि की संवेदना प्रस्तुत कविता में स्पष्ट मुखरित हुई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि शोषण तथा उत्पीड़न की शिकार जनता द्वारा अपने अधिकारों के संघर्ष का वर्णन कर रहा है। यह समस्त संसार में रहने वाली जनता के शोषण के खिलाफ संघर्ष को रेखांकित करता है। इसलिए कवि उनके चेहरे की झुर्रियों को एक समान पाता है। कवि प्रकृति के माध्यम से उनके चेहरे की झुर्रियों की तुलना गली में फैली हुई धूप से करता है। अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत जनता की बँधी हुई मुट्ठियों में दृढ़-संकल्प की अनुभूति कवि को हो रही है।

गोलाकार पृथ्वी के चतुर्दिक जन समुदाय का एक दल है। आकाश में एक भयानक सितारा चमक रहा है और उसका रंग लाल है। लाल रंग हिंसा, हत्या तथा प्रतिरोध की ओर संकेत कर रहा है, जो दमन, अशांति एवं निरंकुश पाशविकता का

शेष आगे